

## वर्शिव थैलेसीमिया दविस

### चर्चा में कर्यों?

8 मई को पूरी दुनया में वर्शिव थैलेसीमिया दविस (World Thalassemia Day) के रूप में मनाया जाता है ।

### थैलेसीमिया क्या है?

- थैलेसीमिया एक स्थायी रक्त वक़ार (Chronic Blood Disorder) है । यह एक आनुवंशिक वक़ार है, जसिके कारण एक रोगी के लाल रक्त कणों (RBC) में पर्याप्त हीमोग्लोबिन नहीं बन पाता है ।
- इसके कारण एनीमिया हो जाता है और रोगियों को जीवति रहने के लयि हर दो से तीन सप्ताह बाद रक्त चढ़ाने की आवश्यकता होती है ।
- थैलेसीमिया माता-पति के जींस के माध्यम से बच्चों को मलिनै वाला एक आनुवंशिक वक़ार है ।
- प्रत्येक लाल रक्त कण में हीमोग्लोबिन के अणुओं की संख्या 240 से 300 मिलियन के बीच हो सकती है ।
- रोग की गंभीरता जीन में शामिल उत्परवर्तन और उनकी अंतःक्रिया पर नरिभर करती है ।

### थैलेसीमिया के प्रकार

**थैलेसीमिया माइनर-** थैलेसीमिया माइनर में, हीमोग्लोबिन जीन गर्भधारण के दौरान वरिस्त में मलिता है, इसमें एक जीन माँ से और एक पतिा से मलिता है । एक जीन में थैलेसीमिया के लक्षण वाले लोगों को वाहक के रूप में जाना जाता है या उन्हें थैलेसीमिया माइनर ग्रस्त कहा जाता है । थैलेसीमिया माइनर कोई वक़ार नहीं है इसमें वयक्त को केवल हल्का एनीमिया होता है ।

**थैलेसीमिया इंटरमीडिया-** ये ऐसे मरीज़ हैं, जनिमें हल्के से लेकर गंभीर लक्षण तक मलिते हैं ।

**थैलेसीमिया मेजर-** यह थैलेसीमिया का सबसे गंभीर रूप है । ऐसा तब होता है, जब एक बच्चे को माता-पतिा प्रत्येक से दो उत्परवर्तति जीन मलिते हैं । थैलेसीमिया मेजर से ग्रस्त बच्चे में जीवन के पहले वर्ष के दौरान गंभीर एनीमिया के लक्षण वकिसति होते हैं । जीवति रहने के लयि उन्हें अस्थमिज्जा प्रत्यारोपण (Bone Marrow Transplant) या नयिमति रूप से रक्त चढ़ाए जाने की आवश्यकता होती है ।

### प्रायः थैलेसीमिया के मरीज़ ग्रस्त होते हैं:

- एनीमिया
- कमजोर हड्डियाँ
- देर से या मंद वक़िास
- शरीर में लौह की अधक़िा
- अपर्याप्त भूख
- बढ़ा हुआ प्लीहा या यकृत
- पीली त्वचा

### तथ्य एवं आँकड़े

- भारत दुनया की थैलेसीमिया राजधानी है, जसिमें 40 मिलियन थैलेसीमिया वाहक हैं और 1,00,000 से अधिक थैलेसीमिया मेजर से ग्रस्त हैं, जनिहें हर महीने रक्त की आवश्यकता होती है ।
- इलाज की कमी के कारण देश भर में 1,00,000 से अधिक मरीज़ 20 वर्ष की आयु प्राप्त करने से पहले मर जाते हैं ।
- भारत में थैलेसीमिया का पहला मामला 1938 में सामने आया था ।
- हर साल भारत में थैलेसीमिया मेजर से ग्रस्त 10,000 बच्चे पैदा होते हैं ।

